वैदिक

मन्त्रसिद्धि

अर्थात्

उच्छिष्टविनायक और सिद्ध योग

मुरादाबाद निवासी

ब्रजरत्नभट्टाचार्यकृत संशोधित संपादित

और हिन्दी भाषा में अनुवादित

जिसको

पं० गंगाशरण ने

श्री ज्ञानसागर यन्त्रालय

मेरठ में

छापकर प्रसिद्ध किया

बिना आज्ञा कोई न छापे सं० १९९३

HERMIT

वैदिक

मन्त्रसिद्धि

अर्थात्

उच्छिष्टविनायक और सिद्ध योग

मुरादाबाद निवासी

ब्रजरत्नभट्टाचार्यकृत संशोधित संपादित

और हिन्दी भाषा में अनुवादित

जिसको

पं० गंगाशरण ने

श्री ज्ञानसागर यन्त्रालय

मेरठ में

छापकर प्रसिद्ध किया

बिना आज्ञा कोई न छापे सं० १९९३

पूर्ववृत्तम्

प्रियतन्त्राऽऽमृत पिपासुव्यक्तिगण !!!

आपने हमारी वैदिक मन्त्रसिद्धि को जिस आदर से अपनाया और उस के द्वारा लाभ उठाया उस के लिये हम आपकी गुणग्राहकता के विशेष कृतज्ञ हैं। क्यों कि आपही की कृपासे यह परिवर्द्धित द्वितीया वृत्ति प्रस्तुत करने का सुअवसर उपस्थित हुआ है। इस आवृत्ति में हम ने बहुत से सिद्ध प्रयोगों का समावेश कर दिया है आशावान् हैं कि इसके द्वारा आप के मनोरथों की सिद्धि अवश्य होगी॥

संपादक और अनुवाद कर्त्ता

विजया १९५७ गुरुवार

व्रजरत्न भट्टाचार्य्य
पटवर गंज स्ट्रीट
मुरादाबाद यू, पी,

अथ

श्रीविनायककल्पः ।

ब्रह्मरत्न भट्टाचार्य कृत

कल्पसुन्दरी

भाषा व्याख्यासहित

ओंएकदन्तायनाथायमन्त्रसिद्धिकरायच ।
नमोऽस्तुगणराजायउच्छिष्टायमहात्मने ।१।

अथ श्रीविनायकमन्त्रः " ओं क्षां क्षीं ह्रीं ह्रूं क्रौं क्रैं फट् स्वाहा " इति । उच्छिष्टोभूत्वा कृष्णाष्टम्यां कृष्णचतुर्दश्यां वा अष्टोत्तरशत जपेनसिद्धिर्भवति

कृष्णपक्षकीअष्टमी अथवा चतुर्दशीको उच्छिष्टहोकर " ओंक्षांक्षींह्रींह्रूंक्रौंक्रैंफट्स्वाहा" इसमन्त्रको १०८ वार एकाग्रमनसे जप करै तौ मन्त्र सिद्ध होजाता है । स्मरणरहै । जिस मन्त्र का नित्य जप किया जाय उस का कीलक दूर हो जाता है ॥

अथाङ्गन्यासः । ओं क्षां हृदयायनमः । ओं क्षीं शिर से स्वाहा । ओं ह्रूं शिखा यँवषट् । ओं हैं कवचायहुम् । ओं क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ओं क्रैं अस्त्रायफट् ।

इस प्रकार पाठ करते समय मूलमें जिसअंगका नाम आया है, उसका स्पर्श करना चाहिये ।

नतिथिर्नचनक्षत्रंनोपवासंविधीयते ॥
हन्तिकार्यंक्षणेशत्रूणांसाधनंतत्रकारणम् ।२

शत्रुओंका कार्य नाशकरनेके लिये तिथि और नक्षत्र इत्यादि शुभमुहूर्त देखके प्रयोग करनेकीआवश्य कतानहीं, औरव्रतभीनहींकरनाचाहिये । केवल संख्या साधनही भली प्रकारकरनेसे उनकेसबकार्यसिद्ध होतेहैं

*** जिन पाठकोंको यह सन्देह होकि-'नेत्रत्रयाय वौषट्' कहके कौनसा अंगस्पर्श करैंक्योंकि मनुष्य के केवलदो ही नेत्रहोतेहैं । वेमहाशय यन्त्रद्वाराअपनीशंकाप्रगट करैं,

निम्बवृक्षोद्भवकाष्ट स्य अङ्गुष्टप्रमाणं गणपतिः कार्यः । एकान्ते स्थापयित्वा ईप्सितस्त्रियो नाम लिखेत् । अष्टोत्तरं शत जापेन सद्य आकर्षणं भवति ।

एक अंगुल की बराबर नीमकी लकड़ी लेकरगणेश जी की मूर्ति बनावे । उसे एकान्तमें स्थापन कर के अभिलषित स्त्रीका नाम लिख २ कर १०८ बार मंत्रको जपे तो तुरन्त आकर्षण होता है ॥

अष्टाविंशति राजवश्यो भवति ॥ गणपतिं स्थापयित्वा राजानमा लिखेत्, अष्टोत्तरशत जपेनसद्यो ह्याकर्षणं भवति गणपतिकुक्षिस्थितो जपेदिष्टसिद्धिर्भवति

उक्त सिद्धमन्त्र को २८ बार जपकरने से राजा वस में होता है ॥ निम्ब काष्ठ से बनीहुई गणेशजीकीमूर्ति

को स्थापित करके राजा का नाम लिखे १०८ वार जप करने से आकर्षण होता है। और गणेशजी की मूर्तिके एक ओर स्थित होकर जप करने से मनोरथ की सिद्धि होती है॥

मस्तके कृत्वा अष्टोत्तर शतजपेत स्वकार्य सिद्धः। अष्टोत्तर शत कनक पुष्पाणि मन्त्रेण सह विनायको परिनिक्षिपेत् स्वकार्यसिद्धिः। राज्ञां चाकर्षणं करोति॥

गणेशजी की मूर्ति को मस्तक के ऊपर धारणकर उक्त मंत्र का १०८ वार जप करने से संपूर्ण कार्य सिद्ध हो जाते हैं। तथा धतूरे के १०८ पुष्पों को मन्त्र पढ़कर वर गणेशजी के ऊपर चढावे तो इष्ट सिद्धि होती है। और राजा का आकर्षण होता है॥

स्त्रीणां वामपादपांशुगृहीत्वा स्त्री प्रतिमांकृत्वा वामहस्तेच गणपतिं गृही-

त्वा तस्योपरि पांशुप्रतिमां निक्षिपेद् ष्टो-
त्तर शताभि मन्त्रितेन स्त्रीणामाकर्षणं
भवति ॥

स्त्रियों के बायें पैर के नीचेकीधूल(मिट्टी)लेकर स्त्री की मूर्तिबनवावे, औरबायें हाथ में गणेशजीकी मूर्ति को धारण करे इस प्रकार १०८ बार मंत्र पढ कर गणेश जी के ऊपर मिट्टी की मूर्ति को चढादेने से स्त्रियोंका आकर्षण होता है ॥

वामहस्ते गणपतिं गृहीत्वा अष्टोत्तर
शत मन्त्रजपेन पुष्पपत्र फलानि यस्मै
दीयन्तेसवश्यो भवति । गणपतिं स्थाप्य
अष्टोत्तर शत जपेन श्रीखण्डं होमयेत्
राजवश्यो भवति । तेन भस्मना तिल
तैलन सह आत्म मुखंलेपयेत् सर्व जन

वश्योऽयं प्रयोग ॥

बायें हाथमें गणेशजी को लेकर १०८ वार मंत्र से अभि मंत्रित करके पुष्प, फल, और पत्र जिसे दिये जांय वोह वस में हो जायगा। तथा गणपतिकी मर्ति को स्थापन करके मन्त्र को १०८ वार जप कर चन्दन से हौम करे तो राजा वस में होताहै। और उस होम की भस्म को तिल के तैल में मिला कर मुखके ऊपर लेप करने से सब वस में होजाते हैं ॥

मन्त्रेण सह कनक समिधा होमयेत् सर्वे वश्या भवन्ति ॥

मन्त्र पढ २ कर धतूरेकी समिधाओं से होम करे तो सब संसार वश में होजाता है ॥

अङ्गुष्टप्रमाणेनतिलकाष्ठ समिधाः कृत्वा होमयेत्। तद्भस्म स्त्रिया वामपादे पुरुषस्यदक्षिणेपादेनिक्षिपेत्द्वेष्यो भवति

तिल के काष्ट की एक २ अंगुल भर समिधा लंके मन्त्र पढ पढ कर होम करे और उस की भस्म को स्त्री के बायें एवं पुरुष के दाहिने पैर के ऊपर छोड़ दे तो परस्पर द्वेष होजाता है।

हवन भस्म तिल तैलेन गोरोचन मिश्रिता मंजनंकरोति यावद्वशिष्टंस्थितं तावद्वश्यो भवति। श्वेत विष्णुक्रान्ता पुष्पाणि विनायकों परिनोक्षिपज्जगद्वश्यो भवति॥

हवन की भस्ममें तिलका तेल औरगोरोचन मिला कर नेत्रों में लगाने से सब बस में हो जाते हैं। श्वेत विष्णु क्रान्ता के पुष्पों को मंत्र पढ पढ कर गणेशजी के ऊपर चढाने से सम्पूर्ण संसार बस में होजाताहै।

इतिश्रीव्रजरत्नभट्टाचार्य मुरादाबाद निवासीकृत

उच्छिष्ट विनायक कल्प समाप्त।

श्रीः

आसुरी कल्प

ब्रह्मरत्न महाचार्य कृत बाल सुन्दरी भाषाटीका सहित

नतिथिर्नचनक्षत्रनोपवासंविधीयते। हन्ति कार्याणिशत्रूणांसेवनंतत्रकारणम् ॥ १ ॥

शत्रुओंका कार्य नाश करने के लिये किसी तिथि औ॰नक्षत्र अर्थात्—शुभ मुहूर्तकी, अथवा किसीप्रकार का उपवास करने की भी कोई आवश्यकता नहीं है, केवल इस ग्रन्थ के अनुसार विधि पूर्वक कार्य करनेसे शत्रुओं के कार्य का नाश और स्वकीय मनोरथों की सिद्ध होती है ॥ १ ॥

अथाङ्गन्यास। ओं अस्य श्री आसुरी मन्त्रस्याथर्वणऋषिः इतिशिरसि। अन्या हतिच्छन्दःइतिमुखे ओंआसुरीदेवताइति

हृदयेहुंबीजम् । फट्शक्ति इतिगुह्य ।स्वाहा कीलकम्, इति पादयोः मम चतुर्विध पुरुषर्थे सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।२।

ओं अस्य श्री आमरी मन्त्रस्याथर्वण ऋषिः । यौं कह कर सिर का स्पर्श करें । इसी प्रकार जिस २ अंग का नाम लिखा है उसी उसी का स्पर्श करना चाहिये ॥ २.॥

अथहृदयादि न्यासः । ओं कटु के कटुक पत्रे हुं फट् स्वाहा हृदयाय नम । ओं शुभगे हुं फट् स्वाहा शिरसे स्वाहा । ओं आसुरी रक्तवासमे स्वाहा शिखायै वौषट् । ओं अथर्वणस्य दुहिते हुं फट् स्वाहा कवचायहुम् । ओं अघे रे अघोर कर्म कारके हुं फट् स्वाहा नेत्रत्रयाय वौ

षट् । ओं हुं फट् स्वाहा अस्त्रायफट् ।

इस का पाठ करते समय मूल में जिस जिस का नाम आता जाय उसी का स्पर्श करना चाहिये यह सब मूलही में स्पष्ट है ॥ ३ ॥

अथध्यान । रक्ताम्बर परिच्छिन्नां रक्ताभरणभूषिताम् । गुंजाहार सवायुक्तां षोड़शाब्देनयुवतीं पीनोन्नतपयोधरांरक्त सनोपविष्टां रक्तचन्दनलिप्ताङ्गी भक्तानाञ्चशुभप्रदाम् । वज्रपद्मासनामक्षमाला धरां सदासुरींध्यात्वा ततोयजनमारभेत् ।

रक्त (लाल) वस्त्र धारण करने वाली, लाल वर्ण वाले अलंकारों से अलंकृत, गुंजा (घुंघुट-चियों की) माला धारण करने वाली, सोलह वर्ष की युवति कठोर (पुष्ट) और ऊंचे

स्तनों वाली लाल आसनपर स्थित, लाल चन्दन से शरीर को लिप्त करै हुए १ पद्मासन लगाने वाली भगवती आसुरी देवता का सौम्य दृष्टीसे ध्यान करके होम करै ॥ ४ ॥

---

१ वामोरुप रिदक्षिण नियमत: संस्थाप्य वामतथा दक्षोरूपरि पश्चिमन विधिना धृत्वा कराभ्यां घृतम । इङ्गुष्ठं हृदये निधाय चिबुकं मासाग्रनालोकयंदेतद्धृ-त्पाधिविकार नाशनकरं पद्मासन प्रोच्यते ॥ अथवा-त्वैोरूपरि विन्यस्य सम्यक् पादतले शुभे । अगुष्ठौच-निबध्नीयाद्धस्ताभ्यां व्यत्क्रमांतत: । पद्मासनमिति प्रोक्त योगिनां हृदयंगमम् ॥

यस्याग्रे प्रेतसंस्थां मुण्ड वलयां रक्तवर्णां त्रिनेत्रां कोट्यादिप्रकाशां मरकत मणिवच्छीलवर्णां सुवर्णां पंचास्या मुग्रदंष्ट्रां हि मकर शिखरां चीनवस्त्रोपवीतां भक्ता-

भीतिं दधानां सकल भय हरा मासुरी चिन्तयेताम् ॥ ५ ॥

जिनके आगेही प्रेत स्थित हैं, सर्पोंके वलय (खंडुए) धारण करने वाली, रक्तवस्त्र तथा तीन नेत्र वाली, करोडों सूर्यकी समान प्रकाश वाली, मरकत मणिकी समान नीलवर्ण करके युक्त, पञ्चमुखी, चंद्रमाके समान सुन्दर रेशमीवस्त्र और रेशमही का यज्ञोपवीत धारण करने वाली, अपने अनन्य भक्तोंको अभयदायिनी और समस्तभय हरनेवाली ऐसी आसुरी देवीका ध्यानकरै ॥५॥

वर्षैर्षोडश भिर्मिता मरि कुलच्छेदोद्य विध्वंसिनीं सम्यक् कुन्तल धारिणीं कुश महा नागत्रिशूलानिच खड्गं मुद्गर तोमरे वनकरैः शक्तिं निजैर्दक्षिणैः पाशामित्ति कपाल दण्ड डमरु खट्वाग खेटे धनुः ॥ वामे खेटक पट्टिशैः करतले शुभैर्वहन्तीं

मुदा व्यक्ता व्यक्त समुद्भवैक जननीं कारुण्य कल्लोलितां ताराचक्र परिच्छदां ग्रहगणैः सेव्यां पिशंगीं जटां बिभ्राणां कटकेश्वरीं नतजनां सन्तर्पयन्तीभजे ६।७

सोलहवर्षकी युवा अवस्था वाली, शत्रुओंके समूह और पापोंके समूहका विनाश करने वाली, सुन्दरकंश कलापसे युक्त कुश महा नाग, त्रिशूल रथांग तोमरऔर शक्ति धारण करने वाली तथा दक्षिण हाथमें पाश भिण्डी कपाल दण्ड डमरु खड्ग खेटक और धनुष धारण करने वाली एवं वामहाथमें शुभखेटक और पटिश को आनन्द पूर्वक धारण करती हुई नूतन और प्रगट सम्पूर्ण वस्तुओंकी उत्पत्ति करने वाली करुणाकी लहरियोंसे युक्त तारामण्डल करके चारों ओरसे वेष्टित और ग्रहगणों करके सेवन करीहुई, पिशंग वर्णकी जटाओंको धारण करने वाली प्राणी मात्रकी ईश्वरी तथा भक्तोंको सन्तुष्ट करने वाली ऐसीआसुरी देवीका हम भजन करतेहैं ॥ ६ ॥ ७ ॥

अथ आसुरी मन्त्र ।

ओं श्रीं ह्रीं क्लीं नमो कटुकं कटुक पत्रेप्रभगे आसुरीरक्तवासिसे अथर्वणस्य दुहिते अघोरे अघोरे कर्म कारके अशुकारयमतिं दह दह उपविष्ट यांगं हनहन पच पच मथ मथ तावद्दह दह तावत्पच पच यावन्मे वशमायाति स्वाहा । इति अयुतं जपः ।८।

इस मन्त्र को दश हजार जप करे तब यह मन्त्र सिद्ध होता है ॥

पुश्चरणकेजपकासंकल्प ।

गुह्याति गुह्यगामित्वं गृहाणास्म त्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्र

सादादिहास्थितः । अनेन मम वाञ्छित फलसिद्धिरस्तु ॥ ९ ॥

अर्थात्—हे देवी । तुम हमारे करे हुए इस जप को ग्रहण करो और तुम्हारी कृपा से हमारे समस्त कामों में सिद्धि हो क्योंकि—तुम सम्पूर्ण गोपनीय कार्यों को भीके प्रकार से जानती हो ॥ इस जप कर के हमारे मनोरथ की सिद्धि हो ॥ ९ ॥

अथ अभिचार (प्रयोग)

राजनं वशी कर्तुकामः- आसुर्या स्तुपिष्टायाः प्रकृतिं कृत्वा अर्क समिद्धि रग्निं प्रज्वाल्य दक्षिणपादादभ्य शस्त्रेण छित्वा घृताक्तां अष्टोत्तरशतं जुहुयात् । होमे समाप्तवशं मायाति ॥ १० ॥

जो पुरुष राजा को अपने वश में करना चाहता हो उस को चाहिये कि राई को पीस कर राजा की

आकृति बनावे और आकके वृक्षकी समिधाओं से अग्निको प्रदीप्त कर के घृत के साथ १०८ आहुती दे इस प्रकार राई और घृतकी १०८ आहुती देने से होम समाप्त हो जाने पर राजा वश में हो जाता है। और उस को दाहिने पैर से दबाकर शस्त्रसे छेदनकरे ।१०।

स्त्रियं वशीकर्तुकामः- आसुर्यास्तु पिष्टेन स्त्री प्रकृतिं कृत्वा वाम पादारभ्य घृताक्तामष्टोत्तरशतं जुहुयात् होमे समाप्ते वशमायाति सप्ताहे वा । ११ ।

जो पुरुष स्त्री को वश में करना चाहता हो वोह राई को पीस कर स्त्री की आकृति बनावे, उसे बायें चरण से दाब कर घृत के साथ राई की १०८ आहुति दे, होम समाप्त होजाने पर स्त्री वश में होजायगी। अथवा होम की समाप्ति से सात दिन पीछे वस में हो जायगी ॥ ११ ॥

ब्राह्मणं वशीकर्तुकामः—पलाशस

मिद्धिरग्निंप्रज्वाल्या सुरीघृताक्तामष्टोत्तर
शतजुहुयात् होमेसमाप्ते वशमायाति।१२

जिस पुरुष को यह कामना हो कि मैं ब्राह्मणको अपने स्वाधीन करलूं उसे यह चाहिये कि पलाश (ढाक) की समिधाओं से अग्नि को प्रदीप्त करके राई को घी में मिलाकर १०८ बार होमकरे होमकी समाप्ति हो जाने पर ब्राह्मण अवश्य वश में होजायगा ।१२।

क्षत्रियं वशीकर्त्तुकामः—आसुरीघृता क्ता
मष्टोत्तरशतं जुहुय तूहोमान्तेवशमायाति

क्षत्रिय को वश में करने की कामना से राई और घृत इन दोनों को मिला कर १०८ बार हवन करे होम पूर्ण होने पर क्षत्रिय वशीभूत होजायगा ॥ १३ ॥

वैश्यंवशीकर्त्तुकामः—आसुरीं लवण
मिश्रां त्रिसन्ध्य मष्टोत्तरशतं जुहुयात्
होमेसमाप्तेवशमायाति ॥ १४ ॥

यदि वैश्य को वश में करनेकी कामना होय तो राई और लवण इनदोनोंको एकत्रित करके तीनोंकाल१०८ वार (एक एक समय में एकसौ आठ २ वार) होमकरे होम समाप्त होजाने पर वैश्यअवश्य वशीभूत होगा

शूद्रवशीकर्त्तुकामः—आसुधीक्षीरा-क्तां अष्टोत्तरशतं जुहुयात्, होमान्तेवश मायाति ॥ १५ ॥

यदि शूद्र को वश करने की कामना करे तो राई और दूध को मिला कर १०८ वार हवन करे होमसमाप्त होजाने पर शूद्र वशमें होजायगा ॥ १५ ॥

अथ नेत्रस्फोटनम् ॥

अर्कं समिद्भिरग्निं प्रज्वाल्य आसु-धीमर्कक्षीराक्ता मष्टोत्तरशतंजुहुयात्यस्य नाम गृह्णाति तदक्षिणीस्फोटयति ।१६

आक की समिधाओं से अग्नि को प्रज्वलितकर के

राई और आक का दूध इन दोनों को मिला कर १०८ वार हवन करे, हवन करते समय जिस का नाम लिया जायगा उसी के नेत्र फूट जांयगे । १६ ।

होमेन प्रत्यानयने आसुरीं क्षीराक्ता मष्टोत्तरशतं जुहुयात् होमान्ते स्वस्थो भवति ॥ १७ ॥

राई को दूध में मिला कर १०८ आहुति दे, होम की समाप्ति हो जाने पर स्वस्थ होजाता है ॥१७॥

मारणम् ॥

निम्बकोष्ठनाग्निप्रज्वाल्यासुरीं कटु तैलाक्तां अष्टोत्तरशतं जुहुयात्होमेनसप्ता हान्म्रियतेरिपुः ॥ १८ ॥

नीम की लकड़ियों से अग्निको प्रदीप्त करके राई में कुट की (अथवा पटोल) का तैल मिला कर १०८ वार हवन करे होम के दिन से सातवें दिन शत्रु की

मृत्यु होती है ॥ १८ ॥

अश्व क्षुर रोमाणि आसुरीं चैकी कृत्ययस्य नाम्ना अष्टोत्तरशतं जुहुयात् स अकस्मादपस्मारेण गृह्यते ॥ १९ ॥

अश्व (घोड़े) के खुर और रोमों को राईमें मिला कर जिस व्यक्तिका नाम ले के १०८ वार हवन करे, उस को अकस्मातही अपस्मार रोग उत्पन्न होजाताहै ॥

पुनः आसुरी घृताक्तामष्टोत्तर शतं जुहुयात् तस्य देहो ज्वरेण गृह्यते।२०।

फिर राई को घृत में मिलाकर जिसके नामसे१०८ आहुति दे तो उसे ज्वर आजाता है। २०।

हामेनप्रत्या नयंनआसुरीं क्षीराक्तां जुहुयात् स्वस्थो भवति। २१।

राई को दूध में मिला कर १०८ वार हवन करनेसे वोह रोगी स्वस्थ होजाता है। २१।

आसुरीं चिताभस्म महामांस मद्य मेकी कृत्व शताभिमन्त्रितेन चूर्णेन नेत्राञ्जनेन उन्मत्तो भवति ॥ २२ ॥

राई, चिता की भस्म, महा मांस और मद्य इन सबको एकत्रित कर के पूर्वोक्त आसुरी मन्त्र से १०० वार अभिमन्त्रित कर के चूर्ण बनावे, उसचूर्णको नेत्रों में लगाने से उन्मत्त हो जाता है ॥ २२ ॥

प्रत्यानयने आसुरीं अजाक्षीरेण जुहुयात् होमेन स्वस्थो भवति ।२३।

यदि इस व्याधी को दूर करना होय तो राई को दूध में मिलाकर होम करने से स्वस्थ होजाता है ।

आसुरी निम्बपत्राणि यस्य नाम्ना जुहुयात् होमेसमाप्ते स बिस्फोटकैर्गृह्यते

नीम के पत्ते और राई इन दोनों को मिला कर जिस का नाम ले के हवन करे, होम समाप्त होने पर

उस के विस्फोटक (फोड़े) निकल आते हैं । २४ ।

प्रत्यानयने घृताक्तामासुरीं जुहुयात् होमान्तेस्वस्थो भवति । २५ ।

यदि उक्त रोग दूर करना हो तो राई को घृत में मिला कर होम करना चाहिये होम समाप्त होजानेपर रोग दूर होकर स्वस्थ होजाता है ॥ २५ ॥

वशीकरण ।

तगरं कुष्ठं जटामांसीं आसुरीपुष्पं चषां चूर्णं कृत्वा शतवाराभिमन्त्रितंयंस्पृशति सदृष्यनुचरोभवति । २६ ।

तगर, कूट, जटामांसी राई के फूल, और उशीर (खश) इनका चूर्ण करके १०० वार मन्त्र पढकर जिसे स्पर्श करे, वोह केवल देखने ही मात्र से अनुचर हो जाता है ॥ २६ ॥

उशीरं तगरं कुष्टं मुस्तासिन्धुफला-

निच। आसुरीं पत्रसंयुक्तांसूक्षम चूर्णन्तु-
कारयेत् ॥ अष्टोत्तरशताभिमंत्रितेनयं
स्पृशतिसवश्यो भवति ॥ २७ ॥

खशखश, तगर, कूठ, मोथा सिन्धुवार के फल (अथवा समुद्र फल) राई और राई के पत्ते इन सबको मिलाकर खूब बारीक पीसकर चूर्ण बनावै, उस चूर्णको १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिसे स्पर्श करै वोह अवश्यही वश में हो जाता है ॥ २७ ॥

आसुरी मूल पत्राणि पुष्पाणि च
फलानि च नागेन्द्र मद संयुक्तां सूक्ष्म
चूर्णन्तुकारयेत् । अष्टोत्तरशताभिमंत्रि-
तेनयं स्पृशतिसवश्यो भवति ॥ २८ ॥

राई की जड़ पत्ते, पुष्प और फल इन में गजमद मिलाकर महीन चूर्ण बनावै, उक्त चूर्णको १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस का स्पर्श करे वोह अपने

वश में होजाता है ॥ २८ ॥

मनःशिला प्रियंगुं च भारंगी नाग केशरं । आसुरी पुष्प संयुक्तं सूक्ष्म चूर्णंच कारयेत ॥ अष्टोत्तर शताभि मंत्रि तनयं स्पृशति स वश्यो भवति ॥ २९ ॥

मनशिल, प्रियंगु, भारंगी, नागकेशर, इनमें राईके फूल मिला कर अति महीन पीसकर चूर्ण बनावे १०८ वार उस चूर्णको अभिमन्त्रित करके जिसका स्पर्श करै वोह वश में होजाता है ॥ २९ ॥

आसुरी पुष्पाणि सौ वीरांजनं नाग केशरं च घृतानि सूक्ष्म चूर्णंकृत्वा साभि मंत्रितेन चक्षुषा अभयेत, यं निरीक्षेत स वश्यो भवति ॥ ३० ॥

राईके पुष्प, सौवीरञ्जा चूर्ण नागकेशर इन सबको बरीक पीसकर घृतमिलावे और उपरोक्त आसुरी मन्त्रसे अभि

सन्त्रिम करके नेत्रों में लगावें फिर जिसे देखे वोह वशमें होजाता है ३०

आसुरी पञ्चांगेन स्वात्मानं धूप येत् तस्य गन्धं य आजि घृक्षति स वश्यो भवति ॥ ३१ ॥

राईके १ पंचांगको खूब बारीक पीसकर उसचूर्णसे अपने शरीर को धूपदे, उस धूपकी सुगन्धको जोकोई सूंघेगा वोह अवश्यही वशमें हो जायगा ॥ ३१ ॥

सर्व कामिक प्रयोग

आसुरीमग्निधां मधुघृताक्तां जुहुयात् सर्वकार्यासिद्धिर्भवति पुत्रार्थी पुत्रंलभत ३२

राईकी लकडियोंको शहत और घृतमें मिलाकर होम करने से पुत्रार्थीको पुत्र प्राप्त होताहै । विशेष क्या कहैं इस प्रयोगसे सबकाम सिद्ध होजातेहैं ॥ ३२ ॥

१ पत्र, फूल त्वचा, और मूल, यह पंचांग कहाता है ।

तत्स्वरूपंकृत्वा खदिरनिम्बार्कसमि
द्भिः अष्टोत्तर शतं जुहुयात् । क्षीरमधु
दधिघृताक्तां आसुरीं दशसहस्राणि जुहु-
यात् । पुरुषः शतायुर्भूयात् ॥ ३३ ॥

मनुष्य का आकार बनाके खैर, नीम, और आक की समिधाओं से १०८ बार हवन करे । तथा दूध, शहत और घृत मे राई को मिला कर १०००० आहुति देने से पुरुष की १०० वर्ष की आयु हो जाती है ॥

राज्यार्थी आसुरीदधिमधुघृताक्तां
दशसहस्रं जुहुयात् राज्यंलभते पुरुषः

राई को दधि, शहत और घी में मिला कर दस सहस्र आहुति देने से राज्य की कामना करने वाले पुरुष को अवश्य ही राज्यकी प्राप्ति होती है ॥

राजकुलेवा सुवर्णार्थी आसुरीपुष्पा
णि दशसहस्राणि जुहुयात् सुवर्णसहस्रं

लभते ॥ ३५ ॥

राई के पुष्पो से दश सहस्र हवन करने से राज्य द्वार से सहस्र भार सुवर्ण प्राप्त होता है ॥ ३५ ॥

परीक्षिकस्यासुरीपल्लवै रष्टशताभि मन्त्रितंकलशं संपूर्ण कृत्वात्मानं स्नाप येत् । अनुष्ठानेनानेनालक्ष्मीर्मुंचतिदुर्भगा सुभगा भवति चातुर्थिकान्नरोमुक्तोभवति

राई के पत्तों से कलश को परिपूर्ण भर के १०८ वार अभि मंत्रित कर स्वयं उस से स्नान करे । इस प्रकार अनुष्ठान करने से संपूर्ण दरिद्र दूर हो जाताहै दुर्भगा स्त्री सुभगा होजाती है एवं चातुर्थिक ज्वर दूर हो जाता है । ३६ ।

मिश्रित प्रयोग ॥

आसुरी दश सहस्र समिधां दधि तिल मिश्रितां जुहुयात् स्त्रीणां नष्टशल्य

वृद्धिर्भवति । ३७ ।

राई की दश सहस्र समिधाओंको दहीऔर तिलों के साथ होम करने से स्त्रियों का घाव वृद्धि को प्राप्त हो जाता है ॥ ३७ ॥

आसुरी सप्ताङ्गुलशल्यं गृहे बध्वा महिषी पयस्विनी भवति । ३८ ।

राई की ७ अंगुल की लकड़ी लेके घरमें बांध देने से महिषी (भैंस) दूध अधिक देने लगती है ॥३८॥

आसुरी पञ्चांगशल्यं लोह मिश्रितं स्मशाने निक्षिपेत् यस्याभिधानेन तस्य शरीरंशुष्यति ॥ ३९ ॥

राई का पंचांग (फल, फूल, मूल, पत्ते, त्वचा) शल और लोह को जिस का नाम ले कर स्मशान में डाले उस का शरीर कृश हो जाता है । ३९ ।

आसुरी मन्त्र व्युत्क्रमेण लिखित्वा

अयुतं जपः मृगमांसे नायुतंहोमः शत्रु भयो भवति । ४० ।

आसुरी मन्त्र को उलटा लिख कर दश सहस्र जप करे और मृग के मांस से दश सहस्र होम करे तो शत्रु को भय उत्पन्न होता है । ४० ।

इति श्री अथर्व वेदान्तर्गता सुरीकल्पो मुरादाबाद निवासिब्रजरत्नभट्टाचार्य्यकृतःसमाप्त

❋ अथ सिद्ध योग ❋

ब्रजरत्नभट्टाचार्य्यकृत रत्नप्रभा

भाषा टीका सहित

अथ कालिका मन्त्र निरूपणम् ॥

अथ वक्ष्यामितें देविकालिकां भव दुःखहां । यां ज्ञात्वा साधको भोगान् मुक्त्वा मोक्ष मवाप्नुयात् । १ ।

हे देवि ! अब हम तुम्हारे प्रति सांसारिक दुःखों का विनाश करने वाली कालिका के वृत्तान्त का वर्णन करते हैं, कालिका भगवती को जान कर साधक जन विविधभांती के भोगों का उपभोग कर के मोक्ष लाभ करता है ॥ १ ॥

मूकोऽपि कवितामेति धनेनच धनाधिपः ॥ बलेन पवनः साक्षात् रूपेण चमनोहरः ॥ २ ॥

कालिका के मन्त्र का जप करने से मूक को कविता करने की शक्ति उप लब्ध होजाती है, धन से कुवेर की समान और साक्षात् पवनकी समान बलवान् एवं मनोहर रूपवान हो जाता है ॥ २ ॥

मन्त्रो द्धारं शृणुरवेमं गुह्यात्गुह्यं तरंमहत् । वर्गादिवन्हिमारूढं वामनेत्रेण संयुतम् ॥ चन्द्रार्धं विन्दुना सन्धि भूषितं

परमेश्वरि ॥ खान्तादि वामनेत्रस्थं व-
ह्निचन्द्रसमन्वितम् ॥ वीजरत्नमिदंप्रोक्तं
साक्षात् कल्पद्रुमप्रिये । सादनंचन्द्रवीज
स्थंभूतस्वर समन्वितम् ॥ चन्द्रार्द्धविन्दु
भूषाढ्यं संपूर्णसिद्धिदंमनुम् ॥ ३ ॥

हे महेश्वरि ! गुप्त से भी अतिशय गुप्त मन्त्रो द्धार का वर्णन करते हैं उसे तुम श्रवण करो वर्गादि (क) वन्हि (र) और वाम नेत्र (ई) एवं चन्द्रार्द्धविन्दु [ँ] इन सब के संयोग से [क्रीँ] यह वीज मन्त्र सिद्ध होता है हे प्रिये ! येही कालिका देवी का उत्तम वीज मन्त्र है हे देवि ! साधक के मनोरथ सिद्ध करने के लिये इसे साक्षात् कल्प वृक्ष ही जानना चाहिये । कारण कि ऐसी कोई भी सिद्धि नहीं है जो इस वीज मन्त्र का जप करने से उपलब्ध न होती हो ॥३॥

अस्यैवाशेषमाहात्म्यं वक्तुनाहं महे-

श्वरि । तथापि कथ्यते देवि । संक्षेपाद् स्ययत् फलम् ॥ मोक्षार्थी लभते मोक्षं कैवल्यं परमं पदम् । देवि रूपं जगत् पश्येत् हैंधतत्रविवर्जयेत् ॥५॥

यद्यपि हे देवि । इस कालिका बीज मन्त्र का संपूर्णतया महात्म्यवर्णन करने की मेरी सामर्थ्य नहीं है, तथापि संक्षेपसे इस उसका माहात्म्य वर्णन करते हैं ॥ उक्त कालिका मन्त्र का जप करने वाला व्यक्ति यदि मोक्ष की भी अभिलाषा करे तो उसे मोक्ष और परम पद कैवल्य की प्राप्ति होती है । साधक व्यक्ति को चाहिये कि भेद बुद्धि को छोड़ कर समस्त जगत को कालिका मय अवलोकन करे ॥ ५ ॥

अथ लक्ष्मी गणेश मन्त्रः ।

तारोरमाचन्द्रयुक्तः खान्तः सौम्या समरिणः । ङेन्तोगणपतिस्तोयं रवरान्ते

दमर्वच ॥ जनंमे वशमादीर्घे वायुः पाव
ककामिनी । अष्टाविंशति वर्णोऽयं मनु-
र्धन समृद्धिदः । १ ।

तार (ॐ) रमा (श्रीं) चन्द्रयुक्त खान्त (गं) सौम्य समीरण (य) अर्थात्—"ओं श्रीं गं सौम्याय गणपतये वरवरद सर्व जनं मे वशमानय स्वाहा" यह अट्ठाईस वर्णात्मक लक्ष्मी गणेश का मन्त्र है ॥

लक्ष्मी विनायको बीजं रमाशक्तिर्ब
सुप्रिया । अन्तर्यामी मुनिश्छन्दो गायत्री
देवतामनोः ॥ २ ॥

लक्ष्मी विनायक मन्त्र के अन्तर्यामी ऋषि गायत्री छन्द लक्ष्मी विनायक देवता श्री बीज स्वाहा शक्ति और निज अभीष्ट सिद्धि के लिये जप करने में विनि योग है ॥ २ ॥

रमा गणेश बीजाभ्यां दीर्घाढ्याभ्यां

षडङ्गकम् । दन्ताभये चक्रवरौ दधानं कराग्र गस्वर्ण घटं त्रिनेत्रम् । धृताब्ज-यालिंगित मब्धिपुत्र्या लक्ष्मी गणेशंकल कामभीडे ॥ ३ ॥

श्रींगां से हृदय को, श्रीं गीं से सिर को, श्रूं गूं से शिखा को स्पर्श करे, येही षडंगन्यास का क्रमहै । अब ध्यान का वर्णन करते हैं—दक्षिण हाथों में दन्त और शंख एवं वाम हाथों में अभय और चक्र धारण करने वाले, जिन के शुण्डाग्र भागमें सुवर्ण घटविराज मान है, जिन के सुन्दर तीन नेत्र हैं, अब्जकरा धारिणी लक्ष्मी जिन का आलिंगन कर रही हैं सुवर्ण की समान दीप्तिमान ऐसे गणेश जी का हम ध्यान और स्तुति करते हैं । ३ ।

चतुर्लक्षंजपेन्मन्त्रं समिद्भि बिल्व शाखिनः । दशांशं जुहुयात् पीठे पुनोक्ते

न अपूजयेत् ॥ ४ ॥

उक्त मन्त्र का चार लाख जप करना चाहिये और बेल की समिधाओं से दशांश हवन कर, और वक्ष्यमाण पीठके उपर उस का पूजन करे ॥ ४ ॥

आदा वंगानि संपूज्य शक्तीरष्टा विमायजेत् वलाका विमला पश्चात् कमला वनमालिका । विभीषिकामालिका चशां करी वसुचालिका । शंखपद्मानिधी पूज्यौ पार्श्वयोः दक्षवामयोः ।५।

प्रथम अंगों की पूजा कर के वलाका, विमला, कमला, वनमालिका, विभीषिका, मालिका, शांकरी और वसुमालिका इन आठ शक्तियों का पूजन करे। एवं दक्षिण और वाम पार्श्वों में क्रम से शंख और पद्मनिधी की पूजा करनी कर्त्तव्यहै ।५।

लोकाधि पांस्तदस्त्राणितद्वहिः परि

पूजयेत् । एवं सिद्धे मनौमन्त्री प्रयोगान् कर्तुमर्हति ॥ ६ ॥

तदनन्तर लोक पालों और उन के अस्त्रों का बहिर्भाग में पूजन करे, इस प्रकार मन्त्र की सिद्धि हो जाने पर मन्त्र शास्त्री को चाहिये कि प्रयोगों का अनुष्ठान करे ॥ ६ ॥

उरो मात्रे जले स्थित्वामंत्री ध्यात्वार्कमंडले ॥ एवं त्रिलक्षं जपतो धनवृद्धिः प्रजायते ॥ ७ ॥

छाती छाती जल में खड़ा हो मन्त्र शास्त्री को चाहिये कि सूर्य मंडल में ध्यान करे ॥ इस विधि से तीन लाख जप किया जाय तो धन की वृद्धि होती है

विल्वमूलं समास्थायतां वज्रतेफलं हितत्। अशोककाष्ठैर्ज्वलितेवन्हाघाज्यान्त

तण्डुलैः ॥ होमतो वशये द्विश्वमर्ककाष्ठं शुचावपि ॥ खादिराग्नौ नरपतिं लक्ष्मीं पाय स होमतः ॥ ८ ॥

विल्व (बेल) वृक्ष की जड़ में बैठ कर तीन लक्ष जप करने से धन की वृद्धि होती है। अशोक वृक्षकी वा आक की समिधाओं से अग्नि को प्रदीप्त कर घृत और चावलों से हवन करे तो संसार भर का वशी करण होता है। खदिर (खैर) की समिधाओं द्वारा हवन करने से राजा वश में होता एवं खीर अथवा भावे का हवन करने से लक्ष्मी वशमें होती है ॥८॥

अन्न पूर्णेश्वरी मन्त्र।

अन्न पूर्णेश्वरी मन्त्रं वक्ष्ये ऽभीष्ट प्रदायकम् ॥ कुबेरो यामुपास्याशु लब्ध वान्निधिनाथ ताम् ॥ १ ॥

अभिष्ट सिद्धि करने वाले अन्न पूर्णेश्वरी की उपासनाका जब हम वर्णन करते हैं, उन्ही अन्न पूर्णेश्वरी की

उपासना करते कुबेरने धनाधीशता की प्राप्तीकीथी ।१।

शंभोः सख्यं दिगीशत्वं कैलासाधी शतामपि ॥ वेदादिगिरिजा पद्मा मन्मथो हृदयं भगः ॥ वतिमाहेश्वरी प्रान्तेन्नपूर्णे दहनांगना ॥ प्रोक्ता विंशतिवर्णेयं विद्या स्याद् द्रुहिणो मुनिः ॥ २ ॥

महादेव की मित्रता, दिशाका स्वामित्व और कैलासकी अधीश्वरता कोभी कुबेरने इसीके प्रतापसे अधिगत कियाथा वेदादि (ओं) गिरिजा (ह्रीं) पद्मा (श्रीं) और मन्मथ (क्लीं) अर्थात् ओं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः भगवति माहेश्वरी अन्न पूर्णे स्वाहा " यह बीस अक्षरका मन्त्र है ॥ २ ॥

कृतिश्छन्दो ऽन्नपूर्णेशी देवता परिकीर्त्तिता ॥

इस अन्न पूर्णा मन्त्रके ब्रह्मा ऋषि, कृति छन्द,

अक्षपूर्ण श्री देवता और अपनी अखिल सिद्धिके लिये जप करनेमें विनियोग है ॥

लक्षं जपो ऽयुतं होमश्चरूणा घृत संयुतः ॥ जयादि नवशक्त्याढ्ये पीठे पूजा समीरिता ॥ ३ ॥

उक्त मन्त्रका लक्षजप एवं घृत और चरु से दश सहस्र हवन करना चाहिये अथच जयादि नवशक्ति से युक्त पीठके ऊपर पूजनकरै ॥ इस मन्त्रका जप करनेसे अन्न धन जन आदि समस्त सिद्धियोंका लाभ होताहै ३

हनुमानजीकामन्त्र ।

"ह्रौं ह्रस्फ्रेरव्फ्रैं हस्रौं ह्रस्व्फ्रैं ह्रसौं हनुमतेनमः"अस्यश्रीहनुमन्मन्त्रस्य राम चन्द्र ऋषि,जगतीच्छन्दः,हनुमान्, देवता ह्रस्रौं बीजम्, ह्रस्फ्रैं शक्तिः ममाभीष्ट

सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

श्री हनुमानजी के उक्त मन्त्रके रामचन्द्र ऋषि जगती छन्द, हनुमानजी देवता, ह्रीं बीज हरफें शक्ति और अपने मनोरथकी सिद्धिके निमित्त जप करने में विनियोग है ॥

एवं ध्यात्वा जपे दर्क सहस्रं जित मानसः ॥ दशांशं जुहुयात् श्रीर्ही नृपयो दध्या ज्य संयुतान् ॥

हनुमान जी का ध्यान करने के अनन्तर मनो निग्रह पूर्वक बारह सहस्र जपकरे और घाल दूध दही तथा घृतमे दशांश हवन करे ॥

एवं कृते महा भूत विष चौरा उपद्रवाः नश्यन्ति क्षण मात्रेण विघ्नेश्विह दानवाः

इस प्रकार करने से महा भूत विष और चौर आदि के उपद्रव एवं दुष्ट ग्रहों और दानवों के भी

उपद्रव तत्काल ही विनाश को प्राप्त होजाते हैं ॥

अष्टोत्तर शतं वारि मन्त्रितं विष नाशनम् । रात्रौनव शतं मन्त्रं जपेद्दश दिनावधि । यो नर स्तस्य नश्यन्तिराज शत्रूक्षभीतयः ॥

उक्त मन्त्र के द्वारा जल को एकसौ आठ वार अभिमन्त्रित कर पिलाने से विष का नाश होता है ॥ जो मनुष्य उक्त मन्त्र को दश दिन पर्यन्त रात्री में नौ सौ जपता है, राजा और शत्रु से उत्पन्न हुई भय जनित आपत्तियें उस की समस्तविनष्ट होजातीहैं ।

अभिचारोक्ष भूतोक्ष ज्वरेतन्मन्त्रितैर्जलैः । भस्मभिस्सालिलैर्वापि ताडयेज्ज्वरिणःक्षुधा ॥ दिनत्रया ज्ज्वरान्मुक्तः ससुखं लभते नरः । तन्मं त्रितैपंजरध्वामीरोगो

जायते ध्रुवम् ॥

अभिचार अथवा भूत जनित ज्वर हो तो भस्म अथवा जल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर ज्वर के रोगीका मर्जनकरे, तो तीन दिन में ज्वर से मुक्ति लाभ कर वह मनुष्य सुख का उपभोग करता है। और उक्त मन्त्र से अभि मन्त्रित की हुई औषधि भक्षण करने से रोगी अवश्य ही निरोगहोजाताहै ॥

तन्मन्त्रितं पयः पीत्वायोद्धु गच्छे न्मनुंजपन् । तज्जल भस्मलिप्तांगः शस्त्र संघैर्न बाध्यते ॥

हनुमान जी के मन्त्र से अभिमन्त्रित किये हुए जल अथवा दूध को पीकर मन्त्र का जप करता करता युद्ध करने के लिये यात्रा करे, और उसी मन्त्र से अभिमन्त्रित की हुई भस्मी को अपने अंग में लगावे तो शस्त्र जनित बाधा उसे व्यथित नहीं करती।

शस्त्रक्षतंव्रणः शोको लूतास्फोटो

ऽपिभस्मना । त्रिमंत्रितेनसंस्पृष्टाः शुष्य न्त्य चिरतो नृणाम् ॥

तीन वार मन्त्र पढ कर गरम लगाने से शस्त्र जनित व्रण, स्फोटक और सूजन आदि समस्त सूख जाते हैं ॥

सूर्य्यास्तमय मारभ्य जपेत् सूर्य्योद् यावधि । कीलकं भस्म चादाय सप्ताहा वधि संयतः ॥ निखनेद्भस्मकी लौ तौ विद्विषां द्वार्य्यलक्षि मू । विद्वेषं मिथआ पन्नाः पलायन्तेऽरयोचिरात् ॥

कील और भस्म को हाथ में ले सूर्यास्त से सूर्यो दयपर्यन्त नियम पूर्वक सात दिन तक मन्त्र का जप करे, फिर उस कील और गरम को शत्रुओं के द्वार में गाड दे, ऐसा करनेसे शत्रु लोग परस्पर वैर भाव कर के बहुत शीघ्र पलायमान होजाते हैं ॥

अभिमन्त्रित भस्माम्बु देहचन्दन संयुतम् । खाद्यादियोजितं यस्मै दीयते सचदासवत् ॥

भस्म जल अथवा चन्दन को अभिमन्त्रित कर भोजन की वस्तु में मिला कर जिसे दिया जाय वह दास की समान हो जाता है ॥

क्रूराश्चजन्तवोऽनेनभवन्ति विधिना वशाः । ईशानदिक्स्थमूलेनभूतांकुशतरोः शुभाम् ॥ अंगुष्टमाचांप्रतिमां प्रविधाय हनुमतः । प्राण संस्थापनं कृत्वा सिन्दूरैः परिपूज्यच । गृहस्याभिमुखे द्वारे निरवने न्मंत्रमुच्चरन् ॥ भूताभिचार चौराग्नि विषरोगनृपोद्भवाः । संजायन्ते गृहेतस्मिन्न कदाचिदुपद्रवाः । प्रत्यहं धनपुत्राद्यैरधते

तद्गृहं चिरम् ॥

इस मन्त्रका विधि पूर्वक जप करने से क्रूर जीव जन्तुभी वशीभूत होजातेहैं। करंज वृक्षकी ईशान कोणकी ओर वाली मूलसे एक अंगुष्ट प्रमाण की हनुमान् जीकी शुभमूर्ति बनावै, उसमें प्राण प्रतिष्टा कर सिन्दूर चढाके पूजाकरै, फिर मन्त्रोच्चारण पूर्वक घरके सामनेही द्वारमें उसे गाढ़दे, ऐसा करने से भूतोंके अतिचार और अग्नि विष रोग और राजा संबन्धी उपद्रव उस घरमें कभी भी नही होते, एवं धन और पुत्रादिकी उस घरमें प्रतिदिन वृद्धि होती है ॥

अथ शिवमन्त्र ॥

"ओं ह्रौं ह्रीं जूं सः प्रपञ्च पारि जाताय स्वाहा,,

इस मन्त्रका सवालक्ष जपकरनेसे सिद्धि होतीहै,, सिद्धहो जाने पर रोजगार में लाभ और धनकी प्राप्ती होती है ॥

शीतलामैं झाड़ देनेका मन्त्र

शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता ॥ शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः

जिसके शीतला (माता) निकली हों, उक्त मन्त्र पढ़के मोरके पंख अथवा नीमकी डालीसे उसे झाड़ा देने पर शीतला की बाधा दूर होजाती है ॥

महा मृत्युंजय (सजीवनी विद्या)

अम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनम् ॥ ऊर्वारुकमिव बन्धना न्मृत्यो मुक्षीय मा मृतादिति ।

इस मन्त्रका जपकरनेसे महामारी आदि विषम रोगोंका निवारण होकर मृत्यु कालभी विजय होताहै ॥

लक्ष्मी मन्त्राद्धार ।

ओं ह्रीं श्रीं लक्ष्मि महा लक्ष्मीमर्व कामप्रदे सर्व सौभाग्य दायिनि अभिमतं प्रयच्छ सर्वं सर्वगते मुरुपे सर्व दुर्जय विमोचिनि । ह्रीं सः स्वाहा ॥

चार लक्ष जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है और नियमपूर्वक जपकरनेसे यथेष्टधनका लाभ होताहै।

श्री याक्षिणी मन्त्र

श्रीं श्रीं याक्षिणी हं हं हं स्वाहा ॥

अस्यवट याक्षिणी मन्त्रस्य विश्रुवा ऋषि पंक्तिश्छन्दः, यक्षिणी देवता, ममाभीष्ट सिध्यर्थं जपे विनियोगः

इस वट यक्षिणी मन्त्रकी विश्रवा ऋषिपंक्ति छन्द,

यक्षिणी देवता, और अपनेसकल मनोरथों की सिद्धिके लिये जप करने में विनियोग है ॥

एवं जपे ल्लक्षसंख्यं जयापुष्पैदशांशनः ॥ जुहुयात पूर्ववत् पीठे पूर्वोक्ते प्रयजेदिमाम् ॥ प्रजपेदयुतं नित्यं सहस्रं हवनं चरेत् ॥ मधूक पुष्पैर्मध्वक्तै स्तत. काष्टैश्च हुताशने ॥ संतुष्टैवं कृते देवी प्रयच्छेदं जनंशुभम् ॥ येनाक्त नयनो मन्त्री निधिं पश्यं ल्लरागतम् ॥

इसमन्त्रकाएकलक्षजपकरै, औरजपाकेपुष्पोंसेदशांशहवनकरेफिरप्रतिदिन दससहस्रजपऔरहवनकरै, महुऐ के पुष्पोंसेघृतमिलाके महुएहीकी समिधाओंसे हवनकरना कर्त्तव्यहै, इसप्रकारकरनेसेदेवीसन्तुष्टहोऐसाउत्तम अंजन प्रदान करती है जिसे नेत्रों में आंजने से अनुष्ठान

करने वाला भूमि में गड़े हुएभी धनका अवलोकन करने लगता है ॥

गोपाल सुन्दरी मन्त्र

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा ॥

अमुमन्त्र जपेल्लक्षं दशांश पाय सांधसा ॥ जुहुया द्वैष्णवे पीठे पूजयेत् सुन्दरीं हरिम् ॥ एवं यो भजते नित्यं श्री मद्गोपाल सुन्दरीम् ॥ सर्वान् कामान वाप्यान्ते सायुज्यं ब्रह्मणोव्रजेत् ॥

इस मन्त्रका लक्ष जप करने से सिद्धि होजाती है, फिर सावेसे दशांश हवन करे, शुद्ध चित्तसे जो पुरुष नित्यही गोपाल सुन्दरीका भजन करता है उसे इस

लोकमें समस्त कामना श्रीकी सिद्धि एवं अन्तमें अमृतकी सरयुज्य पदवी का लाभ होता है ॥

मन्त्र

"ह्रीं क्ष्रौं ह्रीं,,

॥ अथवा ॥

"ओं क्ष्रौं ओं,,

जुहुयां दुदके तस्य सर्वे नस्यन्तु पद्रवाः ॥ महोत्पात हरोप्येष होमः सर्वे ष्टदो नृणाम् ॥ संस्थाप्य विधिवत् कुम्भ जपेदष्ट सहस्रकम् ॥ अभिषिं चेद्विषा क्रान्तं विष्तार्त्ति निवृतये ॥ विचरन् विपिने चौर व्याघ्र सर्पा कुले नरः ॥

जपन्नमुं मन्त्रवरं नभयं प्रति पद्यते ॥
ईक्षितांनिशिदु:स्वप्ने जपन्मन्त्रानिशांनयेत्
अपाशिष्टंस्वप्नफलंसम्यगादिशतिध्रुवम ।
कर्णनेत्रशिरःकंठरो गान्मन्त्रो विनाशयेत्

पूर्वोक्त दो मन्त्रों मेंसे किसी एकका जप करके उसे सिद्ध करले, तब समस्त उपद्रवों का निवारण होताहै। उक्त मन्त्रों के द्वारा हवन करने से महा उत्पातों की शान्ति और मनुष्यों के अखिल मनोरथों की सिद्धि होती है, विधिवत् षट अस्त्रोपन पूर्वक आठसहस्र मन्त्रकाजपकरै, उस अभिमन्त्रित जलसे अभिषेचन करने पर विष जनित व्याधिका निवार होताहै। इस मन्त्रका जप करतार जो मनुष्य वनमें विचरता है उसे चोर व्याघ्र और सर्पादि किसीका भी भय नहीं होता। रात्री में दुःस्वप्नका अवलोकन

करेतो इस मन्त्रका जप करने से शुभ फल होता है। एवं यह मन्त्र कान नेत्र शिर और कंठके रोगों कामी निवारण कर देता है॥

इति श्री-मुरादा बाद दोग्रिक
ब्रह्मरत्न मंट्टाचार्य्य कृत
रत्नप्रभा भाषा टीका
सहित सिद्ध योग
समाप्तः

मन्त्रसिद्धि सम्पूर्ण

शुभम्॥

मैस्मरेज़म जादू

यदि आप अपने घर के-मरे हुये मनुष्योंसे बात चीत करना चाहते हैं तो इस पुस्तक के जरिये से कर सकते हैं दाम ।-) डांकखर्च ≠)

असली कोक शास्त्र

इस में स्त्रियों की परिक्षा और उन के अनेकरोग दूर होने के यत्न पुरुष-परिक्षा नपुं सकता के कारण उन के दूर होने की अनेक दवा गर्भ रहने के उपाय आदि अद्भुतसी बातेंहैंदाम ।-) पांचआने डांकखर्च =)

दरजी की पुस्तक

इस पुस्तक में सर्व प्रकार के कपड़े सीने काटने की रीती चित्रों सहित लिखी हैं दाम ।-) डांकखर्च≠)

बड़ी भृगु संहिता महाशास्त्र

यह ज्योतिष का सर्व शिरोमणि ग्रंथ भाषा सहित छपा है पंडितों के लिये, पारस पथरी के समान है मूल्य १०) रुपये १५) रुपये २१) रुपये

ग्रह सारणी

इस के द्वारा चाहो जिस सम्वत के ग्रह बिना पंचांग इस में देख लो और इस में नह जन्म पत्र बनाने और वर्ष आदि बनाने और देखने की रीति बहुत सुगम लिखी है दाम ॥) आने

प्रत्यक्ष मूक प्रश्न भाषा

यह पुस्तक पांच मिनटमें गणित चक्र से प्रश्नकर्ता के गुप्त प्रश्न का हाल कह देती हैं दाम ॥) आने

कहानी टका कमानी

यह कहानी क्या है रुपया पैदा करनेका एक अमूल्य रत्न है दाम ।) आने डाकखर्च =)आने

पुस्तकें मिलनेका पता—

पं० गंगाशरण हरदेवसहाय

ज्ञानसागर प्रेस. शहर मेरठ